कीमत प्रभाव (Price Effect)

कीमत उपभोग वक्र

उपभोक्ता की आय एवं रूचि की स्थिर दशा में उपभोग की किसी एक वस्तु की कीमत का परिवर्तन (जबकि दूसरी वस्तु की कीमत स्थिर है) के कारण उसकी माँग में परिवर्तन उत्पन्न करता है जिसे कीमत प्रभाव कहा जाता है।

दूसरे शब्दों में, उपभोक्ता की आय, उसकी रूचियाँ और अन्य वस्तुओं की कीमतें समान रहने पर, कीमत प्रभाव उपभोक्ता की किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उस समस्त प्रभाव को मापता है जो कि उस वस्तु की क्रय मात्रा पर पड़ता है। जब किसी वस्तु की कीमत में कमी या वृद्धि होती है तो उसकी (उपभोक्ता) की संतुष्टि में भी परिवर्तन होगा।

कीमत प्रभाव को निम्न चित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते है।

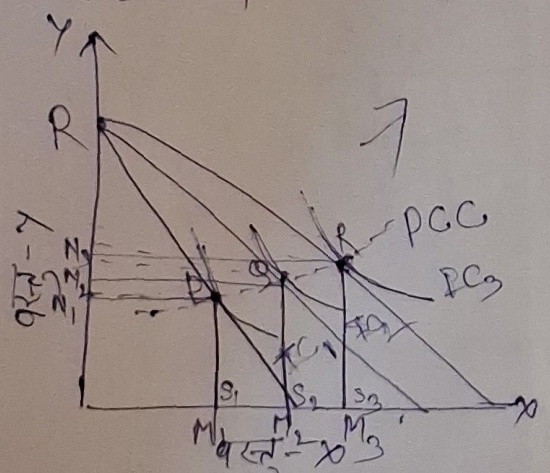

कीमत प्रभाव X वस्तु की कीमत में कमी/वृद्धि

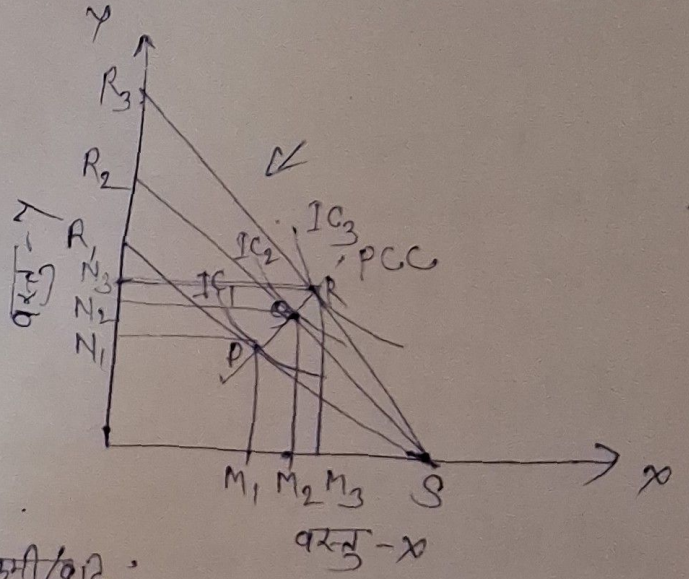

कीमत प्रभाव Y वस्तु की कीमत में कमी/वृद्धि

जहाँ PCC = कीमत उपभोग वक्र (Price consumption curve)

RS = बजट रेखा ($P_x X + P_y Y = M$)

प्रारम्भिक कीमत रेखा R_1S_1 है जिस पर उपभोक्ता उदासीनता वक्र IC_1 पर रहते हुए बिन्दु P पर सन्तुलन की दशा में है। उपभोक्ता की मौद्रिक आय तथा वस्तु Y की कीमत में कोई परिवर्तन न होने पर वस्तु X की कीमत में कमी कीमत रेखा को R_1S_2 पर ले जाएगी, जहाँ उपभोक्ता नई कीमत रेखा RS_2 पर IC_2 के बिन्दु Q पर संतुलन में होगा। वस्तु X की पुनः कीमत की कमी उपभोक्ता को ऊँचे उदासीनता वक्र IC_3 के बिन्दु R पर संतुलन में होगा। वस्तु X की कीमत में कमी वस्तु X के उपभोग की मात्रा को OM, OM_2 तथा OM_3 की वृद्धि कर रहा है।

तीनों स्थितियों के संतुलन बिन्दुओं P, Q तथा R को यदि मिला दिया जाए तो हमें कीमत उपभोग वक्र (PCC) मिलता है, जो कीमत प्रभाव को बताता है, यदि वस्तु X की कीमत में वृद्धि होती है तो R_1S_3 को R_1S_2 में बदलेगा तथा R_1S_2 को R_1S_1 के रूप में। इस स्थिति में बिन्दु R से Q तथा बिन्दु Q से P तक गमन उस कीमत प्रभाव को बताता है जिसमें वस्तु X की कीमत में वृद्धि हो रही है।

वस्तु Y की कीमत में परिवर्तन को रेखाकृति [B] के द्वारा प्रदर्शित कर सकते हैं